होति। यज्ञस्योद्ये। स्वाहाधिमाधीताय स्वाहा। स्वाहाधीतं मनसे स्वाहा। स्वाहा मनः पुजापतये स्वाहा। काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कत्मस्मै स्वाहित प्राजापत्ये मुख्ये भवतः। पुजापतिमुखाभिरेवैनं देव-ताभिरद्यक्तते॥१॥

अदित्यै खाहादित्यै मह्यै खाहादित्यै सुमडी-कायै स्वाहेत्याह। इयं वा ऋदितिः। अस्या एवैनं प्र-तिष्ठायाच्छते। सर्खत्यै स्वाहा सर्खत्यै रहत्यै स्वाहा सर्स्वत्यै पावकायै स्वाहित्याह। वाग्वै सर्स्व-ती। वाचैवैनमुद्यक्ति। पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे नरं धिषाय स्वाहित्याह। पश्वा वै पूषा। पशुभिरेवैनमुद्य च्छते। त्वष्ट्रे स्वाहा त्वष्ट्रे तुरी-याय स्वाचा त्वष्टे पुरुषपाय स्वाचेत्याच॥ त्वष्टा वै प-शूनां मिथुनानाः रूपकत्। रूपमेव पशुषु द्धाति। अयो रूपरेवैनमुद्य क्ते। विष्णवे स्वाहा विष्णवे नि-खुर्यपाय स्वाहा विष्णवे निभूयपाय स्वाहेत्याह। यज्ञा वै विष्णुः। यज्ञायैवैनमुद्यक्ति। पूर्णाइतिमुत्तमां जु-होति। प्रत्युत्तब्ध्यै सयत्वाय ॥ २॥

यच्छते पुरुरूपाय स्वाहित्याहाष्ट्री च॥ अनु॰ ११॥